The Chitransh Academic & Research
An International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume1 | Issue 4 | September 2025
ISSN: 3049-303X (Online)
Website: www.thechitranshacadmic.in

# विशेष बच्चों के चित्रों पर बसंत ऋतु का मनोवैज्ञानिक प्रभाव

**मंगलदीप**

शोधार्थी, चित्रकला विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

**डॉ. अमिता राज गोयल**

एसोसिएट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

**लेख विवरण**

**शोधपत्र**

**प्राप्ति तिथि: 16/09/2025**

**स्वीकृति तिथि: 26/09/2025**

**प्रकाशनतिथि: 30/09/2025**

**मुख्य शब्द** : विशेष बालक, मूकबधिर, चित्रकला, बसंत ऋतु, अभिव्यक्ति, मनोवैज्ञानिक प्रभाव।

**सारांश**

कलाकार जब किसी कलाकृति को कैनवस पर उकेर रहा होता है तो वह अपने तय समय की संवेदना को भी बन रहा होता है। ऐसा करते वह अतीत को भी कलाकृति में आमंत्रित कर रहा होता है तो भविष्य के स्वरों को भी उसमें संजो रहा होता है। कलाकार के लिए वह समय भी महत्त्वपूर्ण होता है, जिस समय वह अपनी सर्जना को कैनवस पर परोट रहा होता है। कलाकृति के जरीए समय की इस बुनावट में वह समय की तमाम विसंगतियों, दुख, त्रासदियों, सुखद स्थितियों की संकल्पना को सामाजिक सरोकारों के साथ उद्घाटित करता है। शोध के लिए राजस्थान के जगदम्बा मूकबधिर विद्यालय, श्री गंगानगर के 10 मूकबधिर बच्चों को ड्राइंग शीट तथा कलर दिए। विशेष बच्चों में मूक बधीर बच्चों से जब बसंत के मौसम में चित्र बनवाए गए तो उन्होंने हरे, पीले, संतरी रंगों को बहुत अधिक मात्रा में प्रयोग किया। इनके चित्रों में पतंग उड़ाते हुए बच्चे, बरसात, छाता पकड़े हुए बच्चे, पीला फूल (सूरजमुखी), रंग-रंगीले फूल, गुलदस्ता पकड़े हुए एक लड़की, सूरज, नीला आकाश व खेत आदि विषय देखने को मिले। इन चित्रों में बसंत की खुशहाली दिखाई देती है। कुछ चित्रों में बच्चों ने अपने हाथ का छापा लगाकर अपने मनोरंजक मनोदसा को जाहिर किया अन्य चित्रों में आड़ी-तिरछी रेखाओं के द्वारा चित्र पूर्ण किया जिसमें कोई विशेष विषय वस्तु नहीं थी इन चित्रों में बच्चे ने मन के संवेगों को कागज पर उकेरा है रेखाओं में व्याकुलता, संघर्ष, उत्तेजना, बैचेनी, शक्ति एवं प्रगति दिखाई देती है क्यों कि इनमें से ज्यादातर रेखाएं तिरछी तथा कोणीय है जो अपना स्वभाव लिए हुए है। शोध करते समय कुछ बच्चों के परिजनों तथा कक्षा अध्यापक से जानकारी मिली की बच्चे इन दिनों रोजाना पेंटिग बनाते है जाहिर है इसके पीछे का कारण इन दिनों का वातावरण या बसंत का मौसम ही है।

**प्रस्तावना :**

“कला भावनात्मक विषय है और रुचि की इसमें महत्ता है। भाव–विभाव–अनुभावों से जो संचारी भाव विचार प्रकटन में भूमिका निभाते हैं। यह एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जो अभिव्यक्ति करने को बाध्य करती है। अभिव्यक्ति इसलिये महत्त्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि इससे व्यक्ति सुख प्राप्त करता है और सुख प्राप्त करना ही सदैव से मानव ध्येय रहा है। साथ ही कलाकार अतिसंवेदनशील होने के कारण दूसरों को भी प्रभावित करता है। यह सृजन शक्ति व्यक्ति में अपनी विशेष मनोभावनायें संवेदनायें विचार पद्धति होने के कारण होती हैं। क्रियाओं एवं प्रतिक्रियाओं के कारण नई–नई सम्भावनायें जन्म लेती हैं।” (सिंह, 2015) दुनिया का फिर से जागना हमारी अपनी कल्पनाओं को जगा सकता है, जिससे नए विचार और अभिनव समाधान सामने आ सकते हैं। यह रचनात्मक ऊर्जा जीवन के सभी क्षेत्रों में लागू की जा सकती है, कलात्मक गतिविधियों से लेकर काम पर या रिश्तों में समस्या–समाधान तक। यह प्रकृति की रचनात्मक शक्ति का दोहन करने जैसा है। मजबूत सामाजिक संबंध बनाना वसंत की भावनात्मक ऊर्जा का दोहन करने का एक और तरीका है। जैसे–जैसे लोग सर्दियों के सापेक्ष अलगाव से बाहर निकलते हैं, अक्सर दूसरों से जुड़ने और जुड़ने की सामूहिक इच्छा होती है। यह मौजूदा रिश्तों को गहरा करने या नए संबंध बनाने का एक बढ़िया समय हो सकता है, जिससे एक सहायता नेटवर्क बनता है जो हमें पूरे साल बनाए रख सकता है।

“अरस्तू ने शरीर और विचारों के सम्बन्ध पर प्रकाश डालते हुए बतलाया कि विचारों का शरीर से अलग कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है, बल्कि विचार शरीर के ही कार्य मात्र है। अरस्तू के अनुसार, विचार की उत्पत्ति प्राणी पर वातावरण के प्रभाव के फलस्वरूप होती है। वातावरण में उपस्थित उत्तेजनाएँ ज्ञानेद्रियों को प्रभावित करती है और यह प्रभाव मनुष्य के हृदय तक पहुँचकर विचारों की सृष्टि करता है। यानी, हृदय पर पड़े हुए प्रभाव के परिणामस्वरूप ही विचार उत्पन्न होते हैं।” (गुलजार, 2011) बालक पदार्थ तथा वस्तुओं को ‘जैसा जानते हैं’ या ‘जिस प्रकार का अनुभव होता है’, वैसी ही आकृति बनाते हैं जैसे उन्हें दिखाई देती है। उनके मन में कल्पना चित्र बन जाते हैं। मनुष्य की मुखकृति गोलाकार बनाते हैं। उसमें आँख, नाक, कान के लिए गोले तथा सीधी व आड़ी तीरछी रेखाएं बनाते हैं। इसी प्रकार शरीर के सभी अंगों को रेखाओं के माध्यम से प्रतिकात्मक रूप प्रदान किया जाता है। अनुभवों के अनुरूप मस्तिष्क में परिवर्तनशील रहते हैं।

“प्रसिद्ध यूरोपियन चित्रकार हेनरी मातिस के अनुसार– ‘‘कलाकार को प्रकृति का मनन करना चाहिए और अपने को उसकी लय के साथ तदाकार कर लेना चाहिए।’’ (An artist must maditate nature, He must identify himself with its rhythm.) अतः प्रकृति से हम लय के साथ–साथ अनेक प्रकार के भाव भी ग्रहण करते हैं। जैसे तूफान के आने पर हम भय का भाव, आतंक का भाव ग्रहण करते हैं। शीत ऋतु में हम शीत का आभास करते हैं।

विशेष बालक जब कला के जरिए कोई अभिव्यक्ति करता है तो वह उस समय केवल अपने आपको ही नहीं बल्कि अपने आसपास की अन्य चीजों और अनुभूतियों को भी धरातल पर रचता है। विशेष रूप से चित्रकला की बात करें तो यह कहा जा सकता है कि उसके मूल में संवेदनशील मानवीय चेतना ही कार्य करती है। कला की रचना प्रक्रिया अभिवाही है, इसका अर्थ यह है कि कला मनन से उपजती हैं और आत्मिक ज्योति से प्रभावित रहती है। कला रचना द्वारा भावनात्मक संयोजन और पूर्नगठन होता है। कला की सामग्री भौतिक है, इसमें भी जैसे जीवन और उर्जा भर जाती है। एक बच्चे का चित्र साधारणतय उसके व्यवहार से सम्बंधित हैं जो समय विशेष पर उसके द्वारा सोचे गए एवं महसूस किये गये अनुभवों का परिणाम है।

“कलाकार जब किसी कलाकृति को कैनवस पर उकेर रहा होता है तो वह अपने तई उसमें समय की संवेदना को भी बन रहा होता है। ऐसा करते वह अतीत को भी कलाकृति में आमंत्रित कर रहा होता है तो भविष्य के स्वरों को भी उसमें संजो रहा होता है। कलाकार के लिए वह समय भी महत्त्वपूर्ण होता है, जिस समय वह अपनी सर्जना को कैनवस पर परोट रहा होता है। कलाकृति के जरीए समय की इस बुनावट में वह समय की तमाम विसंगतियों, दुख, त्रासदियों, सुखद स्थितियों की संकल्पना को सामाजिक सरोकारों के साथ उद्घाटित करता है।” (काशलीवाल, 2016)

## साहित्य अवलोकन :

(तमारा आर. कोवासेविक और संजा टी. जोकोविच 2023) ने अपने शोध पत्र 'बधिरों और कम सुनने वाले प्रीस्कूल बच्चों में कलात्मक अभिव्यक्ति का विकास' में कलात्मक विकास के चरणों और कलात्मक अभिव्यक्ति के उपचारात्मक प्रभाव के महत्व का विश्लेषण किया। बधिर या कम सुनने वाले बच्चे द्वारा बनाई गई ड्राइंग उनके सामाजिक, संज्ञानात्मक, भावनात्मक और शारीरिक विकास, धारणा के विकास और सौंदर्य की भावना तथा रचनात्मकता का आकलन करने का अवसर प्रदान करती है। अभिव्यंजक और सौंदर्य विकास के माध्यम से, बच्चे अशाब्दिक, दृश्य, श्रवण, संवेदी और मौखिक अनुभवों में अपने ज्ञान और कौशल का विस्तार करते हैं। निष्कर्ष में बधिर और कम सुनने वाले बच्चों की कलात्मक अभिव्यक्ति सुनने वाले बच्चे से पीछे नहीं रहती है। सुनने में अक्षम बच्चों के दृश्य चित्रण सुनने में अक्षम बच्चों के दृश्य चित्रण से कहीं ज़्यादा बास्तविक होते हैं। बहरे और कम सुनने वाले बच्चों की दृश्य धारणा में शारीरिक बनावट, हरकत, चेहरे के भाव, शारीरिक मुद्रा और रंग से संबंधित कई विवरण शामिल होते हैं। बच्चे खुद से और पर्यावरण में संवाद करने के लिए कला का इस्तेमाल करते हैं। इस प्रकार, बच्चे अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को स्वतंत्र रूप से और सहजता से व्यक्त करते हैं, जो सक्रिय और रचनात्मक व्यक्तियों के निर्माण की प्रक्रिया में उनकी क्षमता के समय विकास में योगदान देता है। बहरे और कम सुनने वाले बच्चों में श्रवण–बाधित पूर्वस्कूली बच्चों के लिए, कलात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से अशाब्दिक और मौखिक संचार के सभी कार्यों को विकसित करना आवश्यक है। कला चिकित्सा के एक भाग के रूप में, चित्रकारी से बधिर और

कम सुनने वाले बच्चों को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर मिलता है, उनकी कल्पना और रचनात्मकता को बढ़ावा मिलता है, तथा उनके संचार कौशल, आत्म–सम्मान और आत्मविश्वास में सुधार होता है।

(योगेन्द्र सिंह नरूका फूलैता, 2014) के द्वारा लिखे गए शोध पत्र 'विशेष बालकों की कला में रंग संयोजनः– एक अध्ययन (मूक–बधिर बालकों के विषेष सन्दर्भ में)' नामक विषय पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मूकबधिर बालको में रंगों की समझ पैदा करना, उनके सार्थक उपयोग को समझना और फिर उसे सृजनात्मकता की ओर अग्रसर करना मुख्य उदेश्य रहा। विशेष बालकों की रंगों के प्रति समझ भी अनोखी होती है तथा उनके प्रभाव भी मन–मोहक होते है। कभी–कभी विशेष बालक अपनी कलाकृतियों में रंगों को सांकेतिक रूप में भी प्रस्तुत करता है। इन बच्चों की कला उन कलाकारों के लिए भी प्रेरणादायक है जो हर समय सृजनात्मक रूप की तलाश में रहते है। मूक–बधिर बालकों की सृजनात्मक क्षमता तथा रंगों के प्रति समझ आयु वर्ग के साथ परिपक्व होती जाती है।

(डॉ. पूनम, 2019) ने अपने शोध पत्र 'कला और मनोविज्ञान का सम्बन्ध' में कला को सुख–दुःख जैसे भावों को अभिव्यक्त करने का माध्यम है, कला के क्षेत्र में तन–मन, रस ग्रंथि, मस्तिष्क, तंत्रिका तंत्र के सभी भाग तथा अचेतन मन हमारे सारे बोधात्मक अनुभव मिलकर ही किसी रूप का सृजन करने में सहायक बताया है। फ्रॉयड, मेंकडुगल, क्रोचे, बर्गसा, भारिता आदि मनोवैज्ञानिकों के सिद्धांतो की सहायता से स्पष्ट किया है कि मनोविज्ञान कला के लिए आधार–स्रोत तो नहीं बन सकता परन्तु कला चिन्तन के क्षेत्र में कुछ उपयोगी तथ्यों को अवश्य उजागर करता है। मनोविज्ञान के अंतर्गत मन एवं मानसिक व्यापारों का क्रमिक वैज्ञानिक अध्ययन है। कला का महत्वपूर्ण पक्ष उसका सुखात्मक अनुभव है जो कि हमे चित्रों में भी देखने को मिलता है। जब कलाकार अपने चारों ओर के वातावरण और समाज के साथ सुख–दुःख को इस प्रकार आत्मसात कर लेता है कि समाज का सुख–दुःख ही उसका सुख–दुःख बन जाता है, इस स्थिति में उसके द्वारा सृजित कलाकृतियाँ स्वान्तः सुखाय की श्रेणी में आती है और उन कलाकृतियों को काल एवं परिस्थितियों की सीमाओं में नही बांधा जा सकता है।

(कामिला एल रिस्किली, 2002) ने अपने शोध परियोजना 'दृश्य कला गतिविधियों के माध्यम से बधिर बच्चों के साथ संचार को प्रोत्साहित करना' में कला चिकित्सा बहरे बच्चों में मौजूद कुछ सामान्य संचार समस्याओं को कम कर सकती है, खासकर उन बच्चों में जिन्होंने पूरी भाषा नहीं सीखी है। यह भी अनुमान लगाया गया है कि औपचारिक चिकित्सा स्थितियों जैसे कि कला कक्षा में उपयोग किए जाने पर इसके अधिक लाभ हो सकते हैं। यह उत्पाद पिछले केस स्टडीज और मुख्य रूप से सुनने वाले बच्चों के साथ कला चिकित्सा के परिणामों पर चर्चा करता है। फिर यह उन अनुकूलनों का सुझाव देता है जो बहरे बच्चों के साथ इन विभिन्न उपचारों का उपयोग करने के लिए किए जा सकते हैं। इसमें यह भी सुझाव दिया गया है कि जो व्यक्ति कला चिकित्सक नहीं हैं, वे कला चिकित्सा अभ्यासों का उपयोग कैसे शुरू कर सकते हैं।

(कमाली नादेर, जावदान मूसा, 2012) के द्वारा लिखे गए समीक्षा आलेख 'कला और मनोविज्ञान के बीच संबंध' में कला को रचनात्मकता को विकसित करने और आंतरिक नवीन शक्तियों की स्थापना के लिए महत्वपूर्ण साधनों में से एक बताया है। साथ ही मनुष्य की कई मानसिक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। मनोविज्ञान द्वारा

मानव व्यवहार जैसे डर, अवसाद की प्रेरणा, मानसिक और मनोवैज्ञानिक विकारों का अध्ययन कर कला द्वारा अवधारणाओं को अर्थ और मूल्य प्रदान कर सकते हैं, जिन्हें मनुष्य छूता है और महसूस करता है। आलेख के अनुसार कला को बच्चों और किशोरों के आत्म–सम्मान को बढ़ाने या मनोवैज्ञानिक समस्याओं के उपचार के साधन के रूप में एक कुशल उपकरण के रूप में माना जा सकता है। मनोविज्ञान और कला के बीच का अंतः संबंध में यह अर्थ देना कला की उत्कृष्ट कृतियों के निर्माण के माध्यम से देखा जा सकता है एवं मनोविज्ञान में व्यक्ति के व्यक्तित्व में अनजाने में स्पष्ट हो सकता है। इस प्रकार, कला और मनोविज्ञान का मिशन मुख्य रूप से मानव समुदायों के लिए वस्तुनिष्ठ व्याख्या, विकास और पूर्णता है और परिणामस्वरूप शिक्षा और प्रकृति और मानव कृतियों से निपटने में उनकी आत्मा को सुचारू बनाना है।

## शोध पद्धति :

पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, लेखो, कला जर्नरल, वेब साईट, फिल्में व डॉक्यूमेंट्री आदि से मालूम हुआ कि मनुष्य के शरीर, आत्मा या मन पर जिस प्रकार वातावरण का प्रभाव पड़ता है उसी प्रकार उनके व्यवहार में भी बदलाव दिखाई पड़ता है, तो क्या विशेष जन (मूकबधिर) की चित्रकला में भी वातावरण का प्रभाव दिखाई देना लाजमी है? स्थानीय विद्वानो तथा कलाकारों के साक्षात्कार से जवाब प्राप्त हुआ कि हाँ क्यों नहीं, जब सधारण व्यक्ति पर ऋतुओं का प्रभाव दिखाई दे सकता है तो मूकबधिर बच्चों के व्यव्हार में भी परिवर्तन नजर दिखाई देगा। प्राथमिक आंकड़ों तथा द्वितीय आंकड़ों के लिए का सहयोग लेकर 'विशेष बच्चों के चित्रों पर बसंत ऋतु का मनोवैज्ञानिक प्रभाव' शोध की रूपरेखा को साकार करने के लिए शोध की मिश्रित अनुसंधान पद्धति को अपनाया, जिसमें मात्रात्मक और गुणात्मक विशेषताओं का मिश्रण शामिल हैं। शोध के लिए राजस्थान के जगदम्बा मूकबधिर विद्यालय, श्री गंगानगर के 10 मूकबधिर बच्चों को ड्राइंग शीट तथा कलर दिए। बच्चों ने उत्सुकता से चित्र बनाये, कुछ बच्चों द्वारा बिना किसी पेसिल ड्राइंग के सीधा ही रंग ब्रश की सहायता से कुछ चित्र बनाये गए, मूकबधिर बच्चों द्वारा विभिन्न विषयों पर चित्रण किया गया।

उपरोक्त अध्ययन सामग्रियों, बच्चों द्वारा बनाये गए चित्रों व सुचनाओं का विश्लेषण कर अपने निष्कर्षो के आधार पर एक समीक्षात्मक दृष्टि से शोध पूर्ण किया गया। उम्मीद है कि इस शोध से विशिष्ट बालकों के भविष्य में लाम होगा। इस शोध से केवल ज्ञान ही नहीं प्राप्त होगा, जबकि इस क्षेत्र में नवीनता और सृजनात्मकता का एक अच्छा विस्तार है, पाठक की रूचि भी बढ़ेगी। यह आशा है कि भविष्य में शोध विद्यार्थियों के द्वारा नये आयामों के साथ इस विषय पर अध्ययन किया जायेगा।

## विशेष बच्चों के चित्रों का अवलोकन :

मनुष्य पर वातावरण के पड़ने वाले प्रभाव के बारे में ईरान के मनोविशेषज्ञ डा. इब्राहीमी मुकद्दम का कहना है कि जिस तरह बसंत ऋतु के दौरान हमारे इर्दगिर्द हरा, नीला, लाल और पीले रंग बहुतायत में दिखाई देते हैं और

हमारी आत्मा तथा शरीर पर इन रंगों का उल्लेखनीय प्रभाव पड़ता है। आकाश का नीला रंग शांति, सहमति, स्वभाव में नर्मी तथा प्रेम का आभास कराता है। हरा रंग, संबंध की भावना तथा आत्म सम्मान की भावना को ऊंचा रखता है। लाल रंग कामना, उत्साह तथा आशा, विशेष प्रकार के आंतरिक झुकाव को उभारता है। सूर्य का पीले रंग का प्रकाश और कलियों का चटखना भविष्य के बारे में सकारात्मक सोच तथा कुछ कर गुजरने की भावना उत्पन्ना करती है।

किसी कलाकृति में कलाकार प्रकृति के सहज स्वाभाविक गुणों की बजाय अपने तई रंगों और रेखाओं का सर्वथा नया लोक रच रहा होता है। रंग मानवीय इन्द्रियों के बीच की क्रिया–प्रतिक्रिया के फलस्वरूप अस्तित्व में आते हैं। शोध कार्य के लिए जगदम्बा विध्यालय, श्री गंगानगर के मूकबधिर बच्चों से मिलने पर कक्षा अध्यापक ने बच्चों को बताया आज सभी पेंटिंग बनायेगे ओर बच्चों को ड्राइंग शीट तथा कलर दिए। बच्चे उत्सुकता से अपनी शीट ड्राइंग करने लगे, कुछ बच्चों ने बिना किसी पेंसिल ड्राइंग के सीधा ही रंग ब्रश की सहायता से कुछ बनाने लगे। इन चित्रों में सभी बच्चों ने अपने पूर्व अनुभव तथा वर्तमान मनोदशा के अनुसार चित्र विषय चुने जिनमें आसमान, बादल, घर, पहाड़, मैदान, पेड़, हाथ की छाप, बरसात का मौसम, पतंग उड़ाते बच्चे, फूल पत्ते, तिरंगा झंडा, गुड़िया आदि। इन चित्रों में मुख्य रूप से लाल, पीले, गुलाबी, नीले, आसमानी, संतरी, सफेद तथा हरा रंग मुख्य रूप से उपयोग में लिया गया है। कुछ बच्चों ने एक से अधिक चित्र बनाए। इन बच्चों के अध्यापकों तथा परिजनों से वार्तालाप में एक अहम बात पता चली कि बच्चे इन दिनों रोजाना पेंटिग बनाने की जिद्द करते हैं अन्य कार्यों की बजाय पेंटिग बनाने में ज्यादा समय बिताते है। बच्चों को रंगों से खेलना बहुत पसंद है, ये अपनी इच्छा से रंगों को चुनते है ओर बिना किसी झिझक के आनंद लेते हुए रंगों को कागज पर बिखेरते है। "ईश्वर निर्मित सृष्टि के कलात्मक सौंदर्य व कलाकार की कला का उससे आंतरिक संबंध के विषय में जर्मन दार्शनिक कांट के निम्नलिखित विचार मननीय हैं– "Nature is beautiful because it looks like art and art can only be called beautiful if we are conscious of it as art while it looks like nature." (प्रकृति सुंदर है क्योंकि वह कलाकृति जैसी दीखती है और कलाकृति को तभी सुंदर माना जा सकता है जब उसका कलाकृति जैसा बोध होते हुए वह प्रकृति जैसी प्रतीत होती है)।" (व्यास, 2010)

कलाकार अपनी स्वयं की व्यक्तिगत भावनाओं एवं अन्तः दृष्टि की अभिव्यक्ति एवं स्वप्नचित्रों के लिए भी कला का प्रयोग करता है। कलाकार अपने आपको जिस सामाजिक रूप में देखता है उसे अपनी कला के द्वारा प्रस्तुत करता है तथा दिखाई देने वाले संसार के अतिरिक्त भी अपनी भावनाओं व अन्तः प्रेरणा से प्रेरित होकर स्वप्न चित्रण भी करता हैं जो व्यक्ति को एक अलग अनुभूति एवं अद्भुतता का आभास देते हैं। "कला हृदय की भावानाओं को रेखा, रंगों, ध्वनि, शब्दों एवं शारीरिक भाव–भंगिमाओं द्वारा हृदय में पहुँचाने का माध्यम है। कला सम्प्रेषित करने के तरीकों को अर्थ प्रदान करती है जो सामान्य मौखिक सम्प्रेषण से बहुत अलग है। इस प्रकार मानव से मानव में भावनाओं को संचारित करना ही कला है।" (नईदुनिया, 2015)

"फ्रायड के अनुसार किसी कलाकृति से दर्शकों को कुछ ऐसी तृप्ति मिलती है। जो बौद्धिकता तथा ऐन्द्रियता से परे है। इड अथवा इगो के जो अंश अर्द्धचेतन मन में चले जाते हैं, उन्हीं में से कलात्मक कल्पना का उदय होता है। इस प्रकार कला की कल्पना का सम्पूर्ण क्षेत्र 'अर्द्धचेतन मस्तिष्क' है। हमारी दमित इच्छाएँ तथा वासनाएँ किसी विशेष अवसर पर तत्कालिक वस्तुओं से बिम्ब लेकर कला के माध्यम से प्रकट होती है। कला में अचेतन की अभिव्यक्ति रंगों तथा रूपों में होती है किन्तु रंग अधिक विश्वसनीय हैं। रंग मन के सभी स्तरों में प्रवेश करके उत्तेजित कर देते हैं जबकि रूप अपने स्तरों के अनुसार बदल जाते हैं। हमारा अचेतन मन दमित इच्छाओं एवं वासनाओं को निर्द्वन्द्व रूप से प्रकट करना चाहता है किन्तु सामाजिक दबाव के कारण अहं उन्हें संयत करके समाज द्वारा स्वीकार्य रूपों में ही प्रकट करता है।" (साखलकर, 2017)

चित्र संख्या : 1 ( पतंगबाजी )

चित्र संख्या 1 में बसंत ऋतु के समय पतंगबाजी करते हुए बच्चों का चित्रण किया है। यहां प्रकृति को अपने रेखांकन से उकेरते बालक ने यथार्थ की सहज अभिव्यक्ति तो की है परन्तु इस अभिव्यक्ति में अपनी मौलिकता भी बनाए रखी है। इसमें सूर्य के साथ नीला आकाश जिसमें कुछ पतंगे उड़ रही है, पृष्ठभूमि में पहाड़, हरे भरे पेड़, अग्र भाग में हरी घास युक्त मैदान बनाया गया है । इस मैदान में तीन बच्चे पतंग उड़ाते हुए बनाए हैं इन बच्चों के पास पतंगें रखी हुई है। आकाश, मैदान, पेड़, पहाड़ और सूर्य आदि के जरीये बच्चे ने यहां चित्र को आकार देते हुए मनुष्य और प्रकृति के रिश्तों की भी बारीक पड़ताल की है। वसंत यहां अपने होनेपन का एहसास दिलाते हुए मानो संवाद कर रही है। इस संवाद में उसका सौन्दर्य दर्शक को आकर्षित कर रहा है। वसंत ऋतु में पतंगबाजी प्रकृति और जीवन के मेलजोल को भी दर्शाती हैं। प्रकृति में आया बदलाव भी बच्चे के चित्र में है। इस बदलाव में पेड़ हरे–भरे, मैदान दूब–घास से भरा हुआ, प्रकृति का सौन्दर्य भी यहां है। कलाकार ने प्रकृति में वसंत ऋतु की मौजूदगी खूबसूरती से चित्रित की है। बच्चे की संवेदनशील कला भावनाएं दर्शकों में सहज संप्रेषित होती है। चित्र में बच्चे ने मुख्य रूप से नीले, हरे, पीले व लाल रंगों का उपयोग किया है। जिसमें नीले और हरे रंग से बना प्रकृति का खूबसूरत रूप मानो सब कुछ सुखद होने का संदेश देता है।

चित्र संख्या 2 में बच्चे ने बरसात (वसंत का आगमन) बनाया है। चित्र में नीले आकाश में घने बादल, पृष्ठभूमि में पहाड़ों के बीच से झांकता हुआ पीला सूर्य और पहाड़ों के नीचे से नदी निकल रही है जो पानी से लबालब भरी हुई दिखाई पड़ रही है। नदी के दोनों ओर मैदान है जिस पर दो सुंदर झोपड़िया कुछ हरे भरे पेड़ तथा पेड़ो के पास बगीचे बने है जिसमें लाल रंग के फूल लगे हुए है। चित्र में बरसात का मौसम बनाने के लिए बच्चे ने सफेद रंग से बहुत सारी पानी की बूंदे बादलों से बरसते हुए बनाई है। बच्चे ने नीले, हरे, लाल, भूरे, पीले तथा संतरी रंगों प्रयोग

अधिक मात्रा में किया है।

चित्र संख्या : 2 ( बरसात )

चटक, गहरे रंगों में कुदरत के नजारे, कलाकार का सौंदर्य बोध है। गहरा नीला आकाश, बादल, मोती की भांति चमकती हुई बारिश की बूंदे, पेड़, पहाड़ तथा पोधो से झांकते फूल आदि दृश्य चित्र में आयी प्रकृति की दृश्यावलियां मानो बोलना चाहती है। रंगों का चटकपन यहां अखरता नहीं, लहराती हुई नदि के जल में छिपी अथाह सम्पदा मानो अपनी समग्रता में अपने सौंदर्य से रिझाने का प्रयास करती हैं। यही नहीं नदी के किनारे बने हुए घर चित्र देखने वाले को ऐसे अनोखे संसार में ले जाता हैं जहां सब कुछ व्यवस्थित और सुंदर है। कहीं कुछ कमी नहीं, कुछ भी बेतरतीब नहीं। दर्शक चाहेगा कि मैं इस संसार में बस जाऊ।

मनुष्य जब कोई वस्तु देखता है तो उसके हृदय के भीतर आन्दोलन होता है । उसकी सहज–क्रियात्मक प्रवृत्ति उस अनुभव को व्यक्त करने के लिए उसे प्रेरित करती है। इस प्रकार वह अपने चित्र में उन्हीं उद्वेगों तथा मनोवेगों की अभिव्यक्ति करना अपना लक्ष्य बनाता है, अर्थात् उसके हृदय में जो हल–चल हुई उसी का प्रतिरूप बाहरी स्वरूपों के आधार पर निर्मित कर उनकी अभिव्यक्ति करता है। इस प्रकार एक ही वस्तु को देखकर विभिन्न चित्रकारों में विभिन्न भावनाएँ, मनोवेग या उद्वेग उठ सकते हैं । चाँद को देखकर एक मनुष्य प्रसन्नता का बोध करता है जब वह संयोगावस्था में हो, परन्तु वही चाँद वियोगावस्था में दुःखदायी हो सकता है। दोनों व्यक्तियों को वही चाँद भिन्न–भिन्न उद्वेग प्रदान करता है। अर्थात् चाँद से अधिक महत्त्वपूर्ण उन दोनों व्यक्तियों की अपनी–अपनी मानसिक अवस्थाएँ हैं । इस प्रकार यदि दो चित्रकार चाँद को चित्रांकित करें तो उनका दृष्टिकोण उसे व्यक्त करने का भिन्न–भिन्न होगा। अर्थात् बाहरी वस्तु से अधिक महत्त्वपूर्ण मनुष्य के मन में छिपी भावना है। यही कारण है कि विविध भावनाओं के कारण विविध प्रकार के चित्रकार है और उनकी विविध शैलियाँ हैं।

चित्र संख्या : 3 व 4 ( बसंत के फूल )

चित्र संख्या 3 व 4 में बच्चों ने रंग रंगीले फूलों का अंकन किया है। ये फूल लाल, पीले, नीले, गुलाबी, संतरी रंगों से बने गए है, जिनकी पत्तियां हरे रंग से बनाई गई है। इन रंग बिरंगे फूलों को देख कर लगता है जैसे वसंत ऋतु का आगमन हुआ है। वसंत ऋतु के

श्रृंगार को कागज पर उकेरती रंग–बिरंगे फूलों की लताएं वसंत के होने का स्वर देती हैं। फूलों के विविध रंगों से मूकबधिर बच्चों के चित्रों में उनकी खुशहाल मनोदशा का अनुभव किया जा सकता है।

बहरहाल, इन बच्चों के चित्रों को देखना इस रूप में सुखद है कि कला में मौलिक दीठ लिये उनके चित्र प्रकृति से जुड़ने का बहुविध रूपों में मानो आमंत्रण देते हैं। इस आमंत्रण में लहराती और बहती नदी, खुले आकाश में उड़ती हुई पतंगें, हरे भरे मैदान, रंग बिरंगे फूलों से भरे चित्र वसंत ऋतु से अनायास ही साक्षात्कार करा देते हैं तो साथ ही इन विशेष बालकों की खुशहाली से भरी मनोदशा से भी अवगत करा देते है। चित्रों से रू–ब–रू होते इस बात का एहसास भी निरंतर होता है कि वे यथार्थ न होते हुए भी प्रकृति की सुन्दरता और जीवन की अनंत संभावनाओं को इस खूबसूरती से दिखाते हैं। मन करता है उनके चित्रों को देखते ही रहें। पहली नजर में उनके चित्रों का अल्हड़पन दिखाई पड़ता है, परन्तु जैसे–जैसे चित्रों पर नजर जाती है, वसंत ऋतु प्राकृतिक रंग स्वतः ही उभरने लगते हैं। इन उभरे रंगों में मूकबधीर बच्चों के मनोवैज्ञानिक रहस्य भी हैं।

चित्र संख्या 5 व 6 में बच्चों ने छापांकन तथा क्षपांकन (स्टेंसिल) पद्धति का प्रयोग किया है। एक चित्र में बच्चे ने ब्रश का इस्तेमाल न करते हुए अपने एक हाथ पर लाल था दूसरे हाथ पर पीला रंग लगा कर दोनों हाथों का कागज पर छापा लगाकर नैसर्गिकता का भाव वक्त किया गया है। यह इस चित्र की मुख्य विशेषता है जो इसे अन्य से अलग बनाती है। द्वितीय चित्र में बच्चे ने अपने एक हाथ को कागज पर रख कर हाथ के चारों तरफ लाईन लगाकर रंग भर दिया और मेंहदी का डिजाईन बनाया है, साथ ही नाखूनों पर गुलाबी रंग भर दिया। इस चित्र में बच्चे ने हरे, नीले, गुलाबी तथा लाल आदि रंग की नेल पॉलिश बनाई है। चित्र में बालिका ने अपनी परंपराएं और रितिरिवाज का स्पष्ट अंकन किया है। प्रस्तुत रंग समय की संवेदना को ही नहीं जताते बल्कि संबंधित विषय का

**चित्र संख्या : 5 ( हाथों का छापांकन )**

**चित्र संख्या : 6 ( हाथ का क्षपांकन )**

माहौल भी रचते है साथ ही मेंहदी का अलंकरण त्यौहार या उत्सव को इंगित करता है। बच्चे का मन खुशहाली से भरा हुआ प्रतीत होता है।

सत्यम् शिवम् सुन्दम् है। ''भरतमुनि ने अपने ग्रन्थ नाट्यशास्त्र में कला सम्बन्धी विचार व्यक्त किये वे सौन्दर्यशास्त्रीय

दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। भरतमुनि ने कला की उत्पत्ति क्रीडनीयक (जो दृश्य व श्रव्य हो) को कला की उत्पत्ति का कारण माना है। क्रीडनीयक अर्थात् जिसके द्वारा ह्ृदय का मनोरंजन किया जा सके, जो ह्ृदय विनोद हेतु लाभकारी हो। आनन्द वस्तुगत न होकर व्यक्तिगत होता है। रस सौन्दर्य के आस्वाद से उपलब्ध होने वाली अनुभूति है जो दर्शक या पाठक को होती है। रस सिद्धान्त में भावाभिव्यंजना को सर्वोपरि महत्त्व दिया जाता है जिससे

आनन्दानुभूति होती है। इस प्रकार रस–सिद्धान्त भाववादी सिद्धान्त है। रस सिद्धान्त में केवल कलागत भावों के

**चित्र संख्या : 7 ( छाता पकड़े हुए बच्चे )**

**चित्र संख्या : 8 ( गुलदस्ता पकड़े हुए लड़की )**

विश्लेषण का ही महत्त्व नहीं है वरन् कला आस्वादन प्रक्रिया को भी यह स्पष्ट करता है। रस के वर्णों का विवेचन करते हुए भरत ने कहा था कि शृंगार का श्याम, हास्य का श्वेत, करुण का कपोत, रौद्र का रक्त वीर का गौर, भयानक का काला, वीभत्स का नील एवं अद्भुत का पीला रंग होता है।'' (चतुर्वेदी, 2017)

चित्र संख्या 7 व 8 में मानव आकृतियां बनाई गई है पहले चित्र में रंग–बिरंगा छाता पकड़े हुए दो बच्चे बनाए गए है। इसमें संतरी, लाल, नीला, गुलाबी, हरा तथा पीला रंग उपयोग में लिया गया है। बालक ने अतीत में जो हुआ उसको याद करते हुए सुखद अनुभूति के प्रति आभार जताने की बेहतरीन कोसिस की है। इसमें बहिन का अपने छोटे भाई के प्रति अपार स्नेह दिखाई पड़ता है। यह बालिका मूकबधिर है जो समाज से विमुख होकर छोटे भाई के साथ आगे बढ़ते हुए भविष्य की सुखद कामना कर रही है। चित्र में बचपन का उभरा समय बोध दर्शक को अपने काल से जोड़ता है तो काल में अंतर्निहित तत्वों से भी अनायास ही परिचय करा देता है। चित्र में प्रयुक्त रंग अपनेपन का भी एहसास कराते हैं। छाते में रंगों की आभा वसंत ऋतु के फूलों का सौरभ लिए जीवन को मानो महकाता है। अन्य चित्र में एक लड़की गुलदस्ता पकड़े हुए खड़ी है इसकी पृष्ठभूमि में बादल युक्त नीला आकाश, संतरी सूर्य, पहाड़, पेड़, राष्ट्रीय ध्वज और दो मंजिला भवन (विद्यालय) बनाया गया है। अग्रभूमि में हरी घास युक्त मैदान बनाया गया है। इस चित्र में बच्चे ने नीला, हरा, भूरा, संतरी, पीला था हल्का गुलाबी रंगों का उपयोग किया है। रंग यहां रेखाओं में ही है तथा अपने स्वतंत्र अस्तित्व में रूप की निर्मिति भी कर रहा है। यही कारण है कि रंग

और रेखाएं मिलकर चित्र में जिस माहोल का निर्माण करती है उसमें स्मृतियों का गवाक्ष है। गणतंत्र दिवस की स्मृतियों का अंकन करते हुए, उसमें वर्तमान वसंत ऋतु का अंकन किया है जिसमें हरे भरे मैदान और पेड़, रंग बिरंगे फूलों का गुलदस्ता पकड़े हुए अपने आप को चित्रित किया है।

इसी प्रकार रंग समन्वयात्मक रूप से हमारे जीवन में विशेष महत्व रखते हैं। हर रंग का अपना अलग प्रभाव होता है जो हमें भावात्मक और संवेगात्मक रूप से प्रभावित करता है। रंग मनुष्य के मनोभावों को सम्प्रेषण के रूप में अभिव्यक्त करने में सहयोग करते हैं। मनोविज्ञानिक दृष्टि में रंग हमारी भावनाओं को प्रभावित करते हैं। रंग का व्यक्ति पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जैसे लाल रंग का सकारात्मक रूप से शक्ति उत्साह और सफलता का संकेतक है तो वहीं नकारात्मक रूप से क्रोध, हिंसा और क्रूरता का प्रतीक है। लाल रंग का प्रयोग उपचार के लिये भी किया गया है। इसे रक्त ऊर्जा की कमी और निम्न रक्तचाप को दूर करने के लिये उपचार के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

"केवल रंग और रेखाओं से ही चित्र अपनी समग्रता में कैनवास पर नहीं आते, मैं समझता हूँ कलाकार जब चित्र बना रहा होता है तो वह अपने भीतर संवेदना के पूरे भव को जी रहा होता है...इसमें बहुत सारी स्मृतियाँ, बहुत सारे अनुभव और चाक्षुष यथार्थ भी होता है। कैनवास पर जब इन्हें वह रूपान्तरित कर रहा होता है तो रंग और रेखाएँ सहयोगी मात्र के रूप में ही काम करती है। असल में तो उस दौर में जिसमें कलाकार जी रहा होता है और उस समय में जिस समय वह कैनवास पर कुछ बना रहा होता है।" (यादव, 2015)

"रविंद्र नाथ टैगोर के अनुसार हमारे हृदय की खिड़कियों से होकर बाह्य जगत् अपने रंग, रूप, गन्ध और ध्वनि को लेकर भीतर प्रविष्ट होता है। हृदय की जितनी अधिक खिड़कियाँ खुली होंगी, बाह्य सृष्टि उतने ही अधिक परिमाण में भीतर प्रविष्ट हो सकेगी। विश्व में जहाँ एक ओर गवाक्षहीन इकाई वाले व्यक्ति हैं जो चारों ओर के वातावरण से पूर्णतया अप्रभावित रहते हैं, वहीं दूसरी ओर रोम–रोम में वातायन लिए मुक्त प्राणी भी हैं, जो प्रकृति की प्रत्येक वस्तु के साथ अपने हृदय का रागात्मक सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं। बाह्य सृष्टि इस प्रकार भीतर पहुँचकर व्यक्ति के व्यक्तित्व के सम्पर्क में आती है और उसके सुख–दुःख, भय–विस्मय, राग–विराग आदि भावों से मिलकर एक नवीन संस्कार ग्रहण करती है। भाव हमारे मन में रहते हैं पर हम उन भावों का आरोप वस्तुओं पर करते हैं। सौन्दर्यानुभूति का आनन्द वस्तु में आरोपित अपनी ही क्रियाओं के फलस्वरूप उत्पन्न होता है। जब हम प्रसन्न होते हैं तो चन्द्रमा भी मुस्कराता हुआ दिखाई देता है। जब हम उदास होते हैं तो सम्पूर्ण प्रकृति ही उदास दृष्टिगत होती है। इन अनुभूतियों के समय हमारी माँसपेशियाँ कोई क्रिया नहीं करती, मन जो अनुभव करता है वही महत्त्वपूर्ण है।" (चतुर्वेदी, 2017)

विशेष बच्चों में मूक बधीर बच्चों से जब बसंत के मौसम में चित्र बनवाए गए तो उन्होंने हरे, पीले, संतरी रंगों को बहुत अधिक मात्रा में प्रयोग किया। इनके चित्रों में पतंग उड़ाते हुए बच्चे, बरसात, छाता पकड़े हुए बच्चे, पीला फूल

(सूरजमुखी), रंग रंगीले फूल, गुलदस्ता पकड़े हुए एक लड़की, सूरज, नीला आकाश व खेत आदि विषय देखने को मिले। इन चित्रों में बसंत की खुशहाली दिखाई देती है। कुछ चित्रों में बच्चों ने अपने हाथ का छापा लगाकर अपने मनोरंजक मनोदसा को जाहिर किया अन्य चित्रों में आड़ी तिरछी रेखाओं के द्वारा चित्र पूर्ण किया जिसमें कोई विशेष विषय वस्तु नहीं थी इन चित्रों में बच्चे ने मन के संवेगों को कागज पर उकेरा है रेखाओं में व्याकुलता, संघर्ष, उत्तेजना, बैचेनी, शक्ति एवं प्रगति दिखाई देती है क्यों कि इनमें से ज्यादातर रेखाएं तिरछी तथा कोणीय है जो अपना स्वभाव लिए हुए है। शोध करते समय कुछ बच्चों के परिजनों तथा कक्षा अध्यापक से जानकारी मिली की बच्चे इन दिनों रोजाना पेंटिग बनाते है। जाहिर है इसके पीछे का कारण इन दिनों का वातावरण या बसंत का मौसम ही है।

## उपसहार :

बसंत ऋतु की पहचान पीले तथा हरे रंग से की जाती है। सभी बच्चों के चित्रों में इन दोनो रंगों का उपयोग बहुत अधिक मात्रा में किया गया है, पीला रंग ज्ञान, आध्यात्मिकता और कुलीनता एवं विकासशीलता का परिचायक है। हमारे धार्मिक अनुष्ठानों में पीले रंग का विशेष महत्त्व है। इस रंग में क्षमा, गंभीरता, उत्पादन, स्थिरता, वैभव, मजबूती, संजीदगी एवं भारीपन का गुण है। पीले रंग को चाहने वाले लोग कुशाग्र बुद्धि, तीव्र स्मरण शक्ति वाले तथा परिश्रमी होते हैं। पीले रंग का प्रभाव हृदय संस्थान पर अधिक पड़ता है। यह पाचन व्यवस्था, आंतों, गुर्दो, दिमाग की सक्रियता के लिए उपयोग किया जाता है। इसका प्रयोग गठिया, तनाव, उदासी, थकान, उन्माद आदि मनोविकारों से मुक्ति पाने के लिए भी किया जाता है। हरा रंग मैत्री और प्रेम का प्रतीक है। इस रंग की विशेषता है चंचलता, कल्पना, स्वप्नशीलता, गतिशीलता, विनोद, प्रगतिशीलता। सामान्यतः हरे रंग को पसंद करने वाले लोग प्रकृति प्रेमी, बौद्धिक, प्रदर्शन प्रियता, मनमौजी, अस्थिर चित वाले होते हैं। हरा रंग आंखों को शीतलता प्रदान करता है। यह शांत एवं शमनकारी है। यह पेचिश रोग, मांसपेशियों के दर्द एवं तनाव के लिए भी लाभकारी पाया गया है। प्रकृति का प्रभाव इतना अधिक होता है कि वर्ष में परिवर्तित होने वाले मौसम में भी मनुष्य के मन–मस्तिष्क को प्रभावित एवं परिवर्तित करते हैं। शोध से ज्ञात होता है कि वे लोग जो मानसिक समस्याओं में घिरे हुए हैं, वसंत ऋतु में वे बेहतर महसूस करते हैं। बसंत ऋतु में कलाकार का मन नई पेंटिग में, लेखक का मन लेखन में, बच्चों का क्रीड़ा में तथा प्रत्येक व्यक्ति का मन वादियों में घूमने का आवश्य ही करता है। इस प्रकार विशेष बच्चों की चित्रकला में भी बसंत ऋतु का सकारात्मक प्रभाव दिखाई पड़ना लाजमी है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. सिंह, ममता. (2015). *दृश्य कला और लोक कला के मूल तत्व एवं सिद्धांत.* जयपुरः राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी. 3.

2. गुलजार, तहमीना. (2011). *मन का विज्ञान.* दिल्लीः मनीष प्रकाशन. 2.

3. काशलीवाल, मीनाक्षी. (2016). *ललित कला के आधारभूत सिद्धांत.* (5 वां एडी.). जयपुरः राजस्थान हिंदी ग्रंथ

अकादमी. 175.

4. व्यास, राजेश कुमार. (2010). *कलावाक.* जयपुरः राजस्थान ललित कला अकादमी. 17–18.
5. *नईदुनिया.* (2015, जनवरी 21). Retrieved जुलाई 25, 2023, from प्रकृति के श्रृंगार की रुत: **https://www.naidunia.com/magazine/nayika-the-nature-of-adornment-290707**
6. साखलकर, र. वी. (2017). *कला के अंतर्दर्शन.* (4 वां एडी.). जयपुरः राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी. 57.
7. चतुर्वेदी, ममता. (2017). *सौंदर्यशास्त्र.* (12वां एडी.). जयपुरः राजस्थान ललित कला अकादमी. 252-256
8. यादव, नरेंद्र सिंह. (2015). *कला के नवीन स्वरूप.* जयपुरः राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी. 162.
9. चतुर्वेदी, ममता. (2017). *सौंदर्यशास्त्र.* (12 वां एडी.). जयपुरः राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी. 180.